केला

प्रजनन

वनस्पतिक विधि

वाणिज्यिक केले बीजरहित और वनस्पति साधन के द्वारा विशेष रूप से संचरित होते हैं। केले में भूमिगत स्टेरम कम होता है, जिसे रिहजोम कहा जाता है, इसमें कई कलियां होती हैं। इन कलियों के प्रत्येक में अंकुरित और अपने प्रकंद रुप तथा एक नया बूलबोस रिहजोम होता है। इनके छोटे पौधों को सकरस कहा जाता है। अधिकांश केलों का प्रजनन रिहजोमस व सकरस अर्थात सोर्ड सकरस और वाटर सकरस द्वारा होता है। प्रारंभिक अवस्थारओं में तंग सार्ड-शेप लीफ ब्लैतड के साथ सोर्ड सकरस का एक अच्छा विकसित आधार होता है। वाटर सकरस में बडी पत्तियां होती हैं , जिनमें स्वातस्थेवर्धक केला क्ल म्पछस की पैदावार नहीं होती है। 2-4 महीने की उम्र के सकरस चयनित किए जाते हैं।

अन्यत रोपण सामग्री पूर्ण या रिहजोमस के टुक्डोंस में होती हैं। जलगांव (महाराष्ट्री) में बसराई किस्मन निष्क्रिय रिहजोमस द्वारा प्रचारित नियम के रुप में है। मूल पौधों की कटाई के बाद , मिट्टी से रिहजोमस को हटा दिया जाता है, ठण्डीउ जगह में रखा जाता है, लगभग 2 महीनों के लिए सूखी जगह में रखा जाता है। शेष अवधि के दौरान , प्रोमीनेन्ट् हार्ट बड को छोडते हुए पेसयूडोस्टंम के बाकी हिस्सेल को सबसे नीचे तल पर रखा जाता है। जब फलैट रिहजोमस को खारिज किया जाता है तो कोनीकल रिहजोम का चयन होना चाहिए। रिहजोमस का वजन 500-700 ग्राम होना चाहिए। यह रोपण की 3-4 महीने की उम्र के होने चाहिए। लेट फलावरिंग होने से बहुत छोटे रिहजोमस बडे आकार के फल देगा जबकि बड़े आकार के रिहजोमस में फूल पहले आ जाते है लेकिन इसमें छोटे आकार के फल/गुच्छेज होते हैं।
चूंकि आनुवंशिक व्यरवस्थाफ में केला अत्यिधिक अस्थिर है, सकरस/रिहजोमस को पौधों से चयनित किया जाना चाहिए, जो स्वकस्थ् होते हैं, इनमें वांछनीय गुच्छाथ गुण और कम से कम एक गुच्छे में 10 हाथों की सहायता होने से अधिक उपज देने की क्षमता होती है।

टिशु कल्च्र

आजकल केला पौधा को टिशु कल्चैर के माध्य म से भी उगाया जाता है। किस्मेंो जैसे श्रीमन्थी, ग्रोस माइकल और ग्रांड नैनी को टिशु कल्च र तकनीक का प्रयोग करके प्राय: उगाया जाता है। सामान्यकत: गौण नर्सरी को ऊपर उठाने के लिए 3-4 पत्ती वाले रोगमुक्तग पौधों को बर्तन में सप्ला ई किया जाता है। प्रारंभ में पौधों को छाया (50 प्रतिशत) में रखा जाता हैं और जब वें हार्ड हो जाते हैं , छाया को धीरे-धीरे कम किया जाता है। 6 सप्ताह के बाद , पौधों को किसी भी छाया की आवश्यबकता नहीं होती हैं। सामान्यात: क्षेत्रीय गड्ढों में पौधों को लगाने से पहले गौण नर्सरी में दो महीने पौधों को रखना काफी अच्छा है।